B-384
L- 15

Environment

वन्य जीव संरक्षण

वन्य जीव

- वन्य जीव संरक्षण अधिनियम के तहत पादप और जन्तु संरक्षण को प्रधानता।

- प्राकृतिक पर्यावरण में अवस्थित
- मानव हस्तक्षेप से मुक्त।
- पारिस्थितिक तंत्र में अपनी प्राकृतिक भूमिका में विद्यमान।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning Platform
KHAN SIR

संरक्षण की आवश्यकता

- पारिस्थितिक संतुलन
- लुप्तप्राय प्रजातियों का संरक्षण
- प्राकृतिक धरोहर
- कई प्रकार के संसाधनों का भण्डार

Scanned by CamScanner

भारत का वन्य जीव आधार →

सर्वेक्षण → Zoological Survey of India.

स्थापित – 1916

मुख्यालय – कोलकाता

अधीनस्थ – पर्यावरण वन एवं जल-वायु परिवर्तन मंत्रालय

मुख्य कार्य →

① वन्य जंतुओं का सर्वेक्षण।

② नयी प्रजातियों का नामकरण और वर्गीकरण।

③ संकटग्रस्त प्रजातियों की सूची तैयार करना।

वन्य जंतुओं की प्रजाति संख्या →

2023 →

- 92,873

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner

- विश्व की जंतु विविधता का ~7.5%
- स्थानिक जंतु प्रजातियों का ~10%

2024 की रिपोर्ट →

जुलाई 2024 में रिपोर्ट जारी

⇓

641 नयी प्रजातियाँ

- 442 पूर्णतः नयी
- 199 पहले से ज्ञात पर भारत में पहली बार खोजी गयी।

+

पौधों की 326 नयी प्रजातियों का भी पता चला।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner

IUCN

[International Union for Conservation of Nature] :-

① स्थापना - 1948

② मुख्यालय - ग्लैंड (स्विट्जरलैंड)

③ पारिस्थितिक तंत्रों एवं वन्य प्रजातियों के संरक्षण को समर्पित।

④ सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों का एक नेटवर्क जो विश्व का पर्यावरण के क्षेत्र में स्थापित सबसे बड़ा नेटवर्क है।

- 1,150 से अधिक सदस्य का संगठन।
- 16000 से अधिक विशेषज्ञ भी जुड़े हुए हैं।

⑤ प्रजातियों के संकट और संरक्षण की

Scanned by CamScanner

स्थिति पर विश्व के सबसे मानक स्रोत के रूप में मान्यता प्राप्त।

⑥ कई अंतर्राष्ट्रीय संधियों की तैयारी में इसका महत्वपूर्ण योगदान है।

a) जैविक विविधता की संधि

b) रामसर संधि

c) बॉन की संधि (प्रवासी प्रजातियों पर संधि)

d) CITES

⑦ संरक्षण के क्षेत्र में 4 महत्वपूर्ण योगदान -

i) प्रजातियों पर संकट की श्रेणियों को परिभाषित करना।

ii) लाल सूची (Red List) तैयार करना और जारी करना.

↓

(संकटग्रस्त प्रजातियों की एक वैश्विक सूची)

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

Scanned by CamScanner

iii) संरक्षण क्षेत्रों का वर्गीकरण

iv) संरक्षण सम्मेलनों का आयोजन (प्रत्येक 5 वर्षों पर)

⑧ IUCN के अंतर्गत 7 आयोग काम करते हैं, जो संरक्षण के 7 भिन्न आयामों से जुड़े हुए हैं-

i) प्रजातियों का संरक्षण

ii) पर्यावरण से संबंधित नीतियों एवं अधिनियम बनाना

iii) संरक्षित क्षेत्र

iv) संरक्षण से जुड़ी सामाजिक नीतियाँ

v) संरक्षण से जुड़ी आर्थिक नीतियाँ

vi) पारिस्थितिक तंत्रों का संरक्षण और प्रबंधन

vii) जागरूकता और जन संपर्क

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner

समस्त प्रजाति आधार

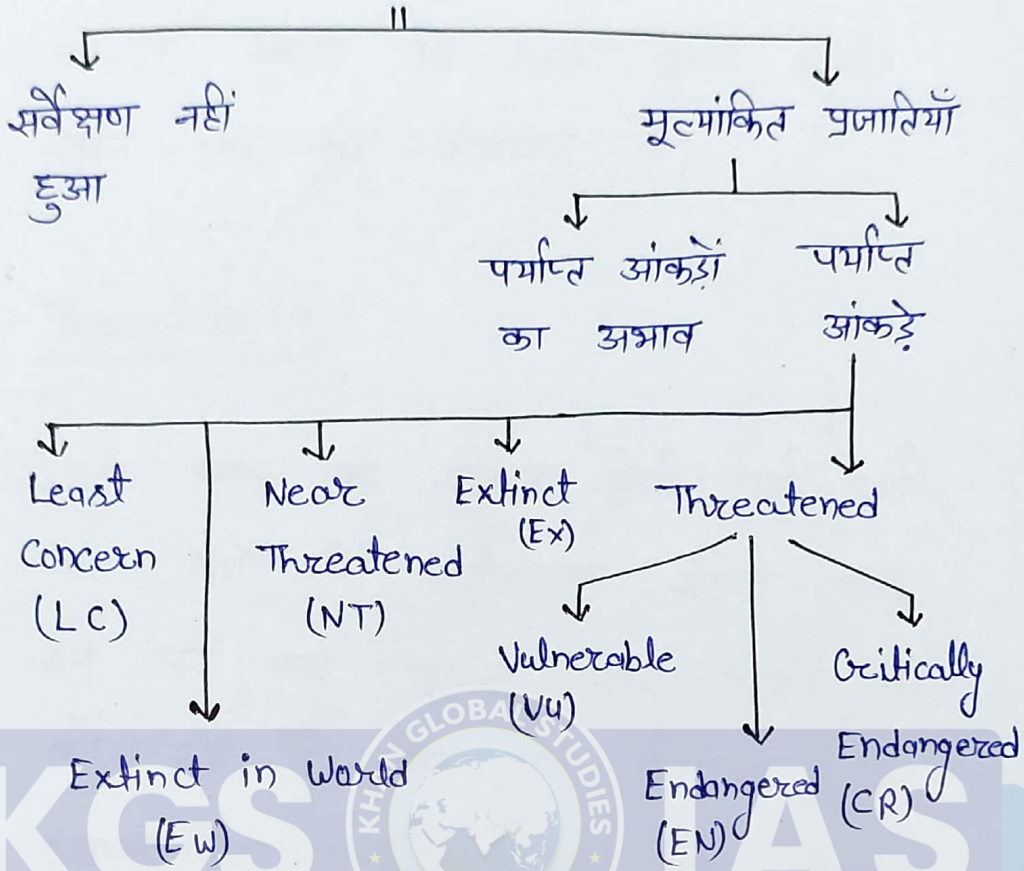

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

LC → एक ऐसी प्रजाति जिसकी पर्याप्त संख्या विश्व के अलग-अलग क्षेत्रों में पायी जाती है और इनके विरुद्ध कोई प्रत्यक्ष संकट भी नहीं है।

NT → वर्तमान में इनकी संख्या और इनका

Scanned by CamScanner

क्षेत्रीय विस्तार पर्याप्त है और इन पर आसन्न संकटों के कारण इनके संकट-ग्रस्त होने की संभावना है।

Threatened →

VU → संकट की न्यूनतम श्रेणी। कई पर्यावास क्षेत्रों में संतोषजनक संख्या किन्तु इन पर कई प्रत्यक्ष संकट अभी भी बने हुए हैं जिन पर नियंत्रण के अभाव में प्रजाति विलुप्ति की संभावना होगी।

EN → संकट की मध्य श्रेणी। कई पर्यावासों में प्रजाति पर विलुप्ति का दबाव पाया जाता है यदि संकटों पर नियंत्रण नहीं किया गया तो विलुप्ति की उच्च संभावना होगी।

CR → संकट की उच्चतम श्रेणी (लुप्तप्राय)।

Scanned by CamScanner

अधिकांश पर्यावासों में इनकी संख्या सीमित तथा संकट का अत्यधिक दबाव, विलुप्ति की उच्चतम संभावना।

EW→ प्रजाति के अधिकांश सदस्य विलुप्त हो चुके हैं, एवं कम मात्रा में जीवित सदस्य सिर्फ मानव संरक्षण में पाए जाते हैं।

Ex→ जब प्रजाति के सभी सदस्य मर चुके हों, दूसरे शब्दों में पूर्ण विलुप्ति। IUCN पूर्ण विलुप्ति की घोषणा तब करता है जब प्रजाति के एक भी सदस्य को पिछले 10 वर्षों में कहीं भी, न पाया गया हो।

जीवित

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner